INDEX

Name : प्रणव अनंत कानिटकर

Std. : ______ Div. : ______ Roll No. : ______

Sub. : ______

School : ______

Sundaram® Books for Success...

Sr. No.	Date	Subject	Page No.	Sign.
		महाभोज		
		दिव्या		
		मैला आँचल		
		गोदान		
		कविता क्या है?		
		श्रद्धा-भक्ति		
		साहित्य जनसमूह के हृदय का विकास है		
		भारतीय संस्कृति		
		साहित्य का उद्देश्य		
		कुटज		
		उत्तराफाल्गुनी के आसपास		
		संवत्सर		
		तुलसी साहित्य के सामंत विरोधी मूल्य		
		अन्य निबंधकार		
		भारत दुर्दशा		
		स्कन्दगुप्त		
		आषाढ़ का एक दिन		

Scanned by CamScanner

		Subject	Page No.	Sign.

महाभोज

जब घर में आग लगी हो तो सिर्फ अपने अन्तर्जगत में बने रहना ××× हास्यास्पद और किसी हद तक अश्लील नहीं लगने लगता !

बेटे तो जाने कितनों के मरते हैं पर ऐसा मान ?

बिसू की मौत ××× लगता है थाली में परसकर मौका आ गया उनके सामने।

इसी क्रान्ति का सपना देखा था? ××× नाम, चेहरे, केवल भले ही अलग-अलग हों - पर अलगाव है कहाँ... सुकुल बाबू ... दा साहब ... रघु ... चौधरी

जो हरिजन टोला है, वहाँ कुछ झोंपड़ियों में आग लगा दी गयी थी, आदमियों सहित।

ये ससुरे सीना तानकर आँख में आँख गाड़कर बात करते हैं। बरदास्त नहीं

Scanned by CamScanner

होता यह सब हमसे।

पर इन नीच जात वालों का कुछ भरोसा नहीं।

ये देहाती धुच्च, डण्डे के बिना कोई रास्ते पर ला सकता है इन्हें भला?

पढ़े लिखे लोग तमाशबीन बनकर बैठे रहेंगे तो इन गरीबों की लड़ाई कौन लड़ेगा?

ओह हॉरीबल...... सिंपली इनह्यूमन ××× त्-त्-त्! और पन्ना पलट गया।

कबों कबों तो रात रात भर छटपट छटपट करे सरकार।

दुर्निवार सम्मोहन भरी उस खतरनाक लपकती अग्निलीक के लिए जो सिर्फ और सिर्फ बिन्दा तक ही नहीं रुकी रहती।

लावारिस लाश को गिद्ध नोच नोच कर खा जाते हैं।

हर बार दिनेश को लड़ाई के मैदान में ले तो जरूर गये हैं ××× उसे वहीं छोड़कर भाग आए हैं - निहत्था, अकेला वह गोलियों की बौछार में लहूलुहान होता रहा और ये खुद एक असह्य अपराध बोध से।

बात को अपने से, अपने मन में होने वाली उथल-पुथल से काटकर भी जिया जा सकता है - यह गुर कोई दा साहब से सीखे।

आवेश राजनीति का दुश्मन है।
मारने वाले को शह दो और मरने वाले को हमदर्दी - दोनों हाथों में लड्डू।
कुर्सी और इन्सानियत में बैर है।

गुलामी आत्मा का क्षय तो करती ही है।

राजनीति में रहकर जिनकी खाल गेंडे की तरह हो गई है, वे कटते नहीं इतनी आसानी से।

शिक्षा मंत्री त्रिलोचन सिंह रावत की कोठी

'बहुत बर्दाश्त कर लिया अब, और नहीं तिल भर भी' वाली मुद्रा अपनाए घूम रहे हैं पिछले हफ्ते से।

xxx जोरावर और सरपंच के यहाँ उसकी आवाज और जबान तक बंधक रखी हुई है। कोई चूँ तक नहीं करता।

मन करता है, फावड़ा लेकर दो टुकड़े कर दूँ जोरावर के, फिर चाहे फाँसी पर ही लटक जाऊँ।

क्रिया

1) मनुष्य भोक्ता नहीं कर्ता है

2) भाग्य का अर्थ है मनुष्य की विवशता। और कर्मफल का अर्थ है कष्ट और विवशता के कारण का अज्ञान।

3) देवता का विधान केवल विश्वास और अनुमान की वस्तु है।

4) जन्म का अपराध? शस्त्र की शक्ति, धन की शक्ति, विद्या की शक्ति - कोई भी शक्ति जन्म को परिवर्तित नहीं कर सकती।

5) वह अपने स्तन के दूध की चोरी करने लगी।

6) निरंतर पराभव और अभिशाप सहकर भी जिसका जीवन दीप स्नेह से प्रज्वलित है।

7) स्त्री जीवन की पूर्ति का एक उपकरण और साधन मात्र है।

8) सफल और सामर्थ्यवान पुरुष अनेक स्त्रियाँ प्राप्त कर सकता है पर सफलता के अवसर जीवन मे अनेक नहीं आते।

9) भिक्षु के धर्म मे नारी त्याज्य है।

10) अभिभावक की अनुमति के बिना संघ स्त्री को शरण नही दे सकता।

11) वेश्या स्वतंत्र नारी है।

12) कुलवधू का सम्मान, कुलमाता का आदर, कुलमहादेवी का अधिकार ××× नारी का सम्मान नहीं, उसे भोग करने वाले पराक्रमी पुरुष का सम्मान है।

13) दासी हीन होकर भी आत्मनिर्भर रहेगी। स्वत्वहीन होकर वह जीवित नही रहेगी।

14) उसकी स्वतंत्रता का भोग जन करता है वह स्वयं नहीं। वह केवल वंचना पाती है।

15) नारी प्रकृति के विधान से नहीं, समाज के विधान से भोग्य है। प्रकृति में और समाज में भी स्त्री और पुरुष अन्योनाश्रय है।

16) तुम्हारी कला तुम्हारी आकर्षण शक्ति का निखार मात्र है जो नारी मे सृष्टि की आदिशक्ति है।

17) वह संसार के धूल-धूसरित मार्ग का पथिक है। वह आश्रय का आदान-प्रदान चाहता है।

18) न्याय व्यवस्थापक के अधीन है।

19) मेरे लिए सब समान है। जिस प्रकार मद्रगण राजस्व के रूप में मेरे व्यापार का श्रेष्ठांश ले लेता है उसी प्रकार केन्द्रस मेरा शोषण करेगा।

20) प्रासादो में स्थित अभिजात वर्ग के दो तीन सौ परिवार क्या कर पाएंगे ××

युद्ध तो जन ही कर सकेगा।

२१) इतिहास विश्वास की नहीं विश्लेषण की वस्तु है। इतिहास मनुष्य का अपनी परंपरा में आत्मविश्लेषण है।

२२) दिव्या इतिहास नहीं ऐतिहासिक कल्पना मात्र है।

२३) जगती हुई चींटी की शक्ति सोते हुए हाथी से अधिक होती है।

२४) अनुराग आदर का क्रियात्मक रूप है।

२५) उसके नेत्रों से अश्रुधार बहने लगी उसे अंक में लेकर सांत्वना देने के प्रयत्न में पृथुसेन स्वयं विह्वल होकर आश्रय ढूंढने लगा।

२६) मनुष्य समाज समय की नदी के तट पर स्थित वन के समान है।

२७) पुरुष उसके चारों ओर घूमता है जैसे कोल्हू का बैल

Scanned by CamScanner

मैला आँचल

1) बरसात में कमला भर जाती है, बाकी मौसम में बड़े-बड़े गड्ढों में पानी जमा रहता है।

2) अब गाँव में तीन प्रमुख दल है- कायस्थ, राजपूत और यादव। ब्राह्मण अभी भी तृतीय शक्ति है।

3) यादव लोग बार बार लाठी भाला दिखाते हैं, राजपूतों के लिए यह डूब मरने की बात है।

4) लड़की की जात बिना दवा दारू के ही आराम हो जाती है।

5) सास्तर में कहा गया है - जोरू जमीन जोर का, नहीं तो किसी और का।

6) बूढ़ी, जवान बच्ची जो मिले। आजादी है।

7) देख तो लछमी का है। एक ब्रह्मचारी का धरम भ्रष्ट करने का पाप उसके माथे है।

8) डाक्टर लोग ही रोग फैलाते हैं।

9) यहाँ इंसान है कहाँ? अभी पहला काम है जानवर को इंसान बनाना।

10) डॉक्टर ने रोग की जड़ पकड़ ली है। गरीबी और जहालत इस रोग के दो कीटाणु हैं।

11) खम्हार: दो महीने की कटनी, एक महीना मड़नी फिर साल भर की खटनी। फिर कर्ज खाओ खम्हार का चक्र चलता रहेगा।

12) भारत माता अब भी रो रही है।

13) अब तो लोगों को चाहिए कि अपनी अपनी टोपी पर भूमिहार, राजपूत, कायस्थ, यादव, हरिजन लिखवा लें।

Scanned by CamScanner

14) मैं आप लोगों को मीठी बातों में भुलाना नहीं चाहता। वह कांग्रेसियों का काम है। मैं आग लगाना चाहता हूँ।

15) कालीचरन ने चमार टोली में भात खा लिया? जात क्या है। जात दो ही है— एक गरीब और दूसरी अमीर।

16) यदि रैयत की दरखास मंजूर हो जाती तो सभी लोग कॉंग्रेस में चले जाते। अब संघर्ष में सभी सोशलिस्ट पार्टी में ही रहेंगे।

17) आजकल संयोजक जी महीने में दो बार घर मनीआर्डर भेजते हैं।

18) इसमें फूल भी है, शूल भी, धूल भी है, गुलाब भी, कीचड़ भी है, चंदन भी, सुंदरता भी है, कुरूपता भी।

19) कथानक है पूर्णिया ×× मैंने इसके एक हिस्से के एक ही गाँव को – पिछड़े गाँवों का प्रतीक मानकर, इसे उपन्यास कथा का क्षेत्र बनाया है।

20) मेरीगंज! रौतहट स्टेशन से सात कोस पूरब, बूढ़ी कोशी को पार करके जाना होता है।

21) धिन्ना धिन्ना धिन्ना मिन्ना मिन्ना
धिन तक धिन्ना डिम डिमिक
धिन तक धिन्ना डिमिक

22) नायक जी हो नायक जी
खोले देहो किवड़िया हो
नायक जी

23) याद जो आवे है प्यारी
तोहरी सुरतिया से
शाले करेजवा में तीर जी

24) मैं साधना करूंगा, ग्रामवासिनी
भारतमाता के मैले आँचल तले।
मैं प्यार की खेती करना चाहता हूँ।

Scanned by CamScanner

२५) गाँव में यह खबर तुरत बिजली की तरह फैल गई कि मलेटरी ने बहरा पेथरू को गिरफ्फ कर लिया।

२६) जिन्दगी है किताबों को
किताबों में बिताये जा
दुनिया के पूंजीवाद को
दुनिया को मिटाए जा

२७) तंत्रिमा टोली में धमाधम पंचायत हो रही है।

२८) कमली जब गमकौआ साबुन से नहाने लगती है तो सारा गाँव धम धम करने लगता है।

२९) वेदान्त ... भौतिकवाद ... सापेक्षवाद ... मानवतावाद ... हिंसा से जर्जर प्रकृति रो रही है।

३०) जवानी की सुन्दरता आग लगाती है और बुढ़ापे की सुन्दरता स्नेह बरसाती है।

Scanned by CamScanner

गोदान

1) छोटे बड़े भगवान के घर से बनकर आते हैं।

2) भगवान सबको बराबर बनाते हैं। यहाँ जिसके हाथ में लाठी है, वह गरीबों को कुचलकर बड़ा आदमी बन जाता है।

3) हम सब बिरादरी के चाकर हैं।

4) दुनिया पैसे की है, हुक्का-पानी कोई नहीं पूछता।

5) खेती में जो मरजाद है, वह नौकरी में तो नहीं।

6) मजूरी करना कोई पाप तो नहीं है।

7) लक्षण कह रहे हैं कि बहुत जल्द हमारे वर्ग की हस्ती मिट जाने वाली है।

8) जिसे हम डेमोक्रेसी कहते हैं, वह व्यवहार में बड़े-बड़े व्यापारियों और जमींदारों का राज्य है। चुनाव में वही बाजी मारता है, जिसके पास रुपये हैं।

9) जो गरीबों को लूटता है उसे लूटने के लिए अपनी आत्मा को अधिक न समझाना पड़ेगा।

10) सभी ताड़ी या शराब में अपनी दैहिक थकान और मानसिक अवसाद को डुबोया करते थे।

11) अब आपकी दया से लखनपुर में रामराज्य है।

12) जब दूसरों के पाँवों तले अपनी गरदन दबी हुई है तो उन पाँवों को सहलाने में ही कुशल है।

13) जिस गृहस्थी में पेट की रोटियाँ भी न मिलें, उसके लिए इतनी खुशामद क्यों।

14) यदि उनकी दवा-दारू होती तो वे बच जाते, पर वह एक धेले भर की दवा न मँगवा सकी थी।

15) यही उसके जीवन का सबसे बड़ा स्वप्न, सबसे बड़ी साध थी।

Scanned by CamScanner

16) बस इस सांस इस दिन से गला छूट जाए तो दूसरी जिन्दगी हो।

17) क्या करे पैसे नहीं है, नहीं किसी को भेजकर डॉक्टर बुलाती।

18) लेकिन ब्राह्मण के रुपये। उसकी एक पाई भी दब गई तो हड्डी तोड़कर निकलेगी।

19) यह पाप धन पचेगा कैसे? तभी दान धरम करना पड़ता है।

20) ये हत्यारे गाँव के मुखिया हैं, गरीबों का खून चूसने वाले! जेल जाने से सुराज न मिलेगा। सुराज मिलेगा धरम से न्याय से।

21) मजदूरों की हड़ताल जारी है, पर अब उससे मिल मालिकों की कोई विशेष हानि नहीं।

22) विपन्नता के अथाह सागर में सोहाग ही वह तृण था जिसे पकड़े वह सागर को पार कर रही थी।

23) गऊ से ही तो द्वार की शोभा है।

24) अब जाता हूँ! गाय की लालसा मन में ही रह गयी!

25) महाराज घर में गाय है, न बछिया, न पैसा। यही इनका गोदान है। (बीस आने)

26) नीच जात लतियाए अच्छा।

27) जब मर्द इधर-उधर ताक झांक करेगा तो औरत भी आँख लड़ाएगी।

28) मेरा प्रोपेगेंडा अब डेमोक्रेसी के खिलाफ होगा।

29) इस ज़माने में मोटा होना बेहयाई है। सौ को दुबला करके तब एक मोटा होता है।

30) गर्दन फटने लगी, पाँव थरथराने

लगे और आँखों में तितलियाँ उड़ने लगी।

31> लम्बी सी, दुबली, पीली, रूखी, कटु।

32> लू चल रही थी, बगुले उठ रहे थे, भूतल धधक रहा था।

33> प्रेम सीधी-सादी गऊ नहीं, खूँखार शेर है।

34> जिया जरत रहत दिन रैन
आम की डरिया कोयल बोले
तनिक न आवत चैन

35> मैं उपन्यास को मानव चरित्र का चित्र मात्र समझता हूँ।

36> किसान पक्का स्वार्थी होता है इसमें संदेह नहीं।

37> उसकी ही उम्र क्या थी? छत्तीसवाँ ही साल तो था, पर सारे बाल पक गये थे ××× पेट की चिन्ता ही के कारण तो।

38> मालती बाहर से तितली थी, भीतर से मधुमक्खी

39> रायसाहब राष्ट्रवादी होने पर भी हुक्काम से मेल जोल बनाए रखते थे।

40> मर्यादा के पीछे आरती का पुण्य क्यों छोड़े?

41> पिचका हुआ मुँह, गहरा साँवला चेहरा

42> तुम तो इस छोकरी पर लट्टू हो गए। कितने छिछोरे हो।

43> बूढ़ों के लिए अतीत के सुखों, वर्तमान के दुःखों और भविष्य के सर्वनाश से मनोरंजक कोई प्रसंग नहीं होता।

44> वह देह की वस्तु नहीं, आत्मा की

Scanned by CamScanner

वस्तु है। उसके मंदिर में तुम परीक्षक बनकर नहीं, उपासक बनकर ही वरदान प्राप्त कर सकते हो।

45) अब वह प्रेम की वस्तु नहीं, श्रद्धा की वस्तु बन गयी थी।

46) मित्र बनकर रहना स्त्री पुरुष बनकर रहने से सुखकर है

47) पुरुष में नारी के गुण आ जाते हैं तो वह महात्मा बन जाता है। नारी में पुरुष के गुण आ जाते हैं तो वह कुलटा हो जाती है।

48) मैं उसे मार भी डालूँ तो प्रतिहिंसा का भाव उसके मन में न आए।

49) स्त्रियों का पुरुषों के क्षेत्र में आना इस युग का कलंक है।

दया श्रद्धा त्याग – कलह हिंसा संग्राम

कविता क्या है?

1) हृदय की इसी मुक्ति की साधना के लिए मनुष्य की वाणी जो शब्द विधान करती आयी है, उसे कविता कहते हैं।

2) प्रच्छन्नता का उद्घाटन कवि कर्म का एक मुख्य अंग है। ज्यों-ज्यों सभ्यता बढ़ती जाएगी, त्यों-त्यों कवियों के लिए यह काम बढ़ता जाएगा।

3) सौन्दर्य बाहर की कोई वस्तु नहीं है, मन के भीतर की वस्तु है।

4) जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञानदशा कहलाती है, उसी प्रकार हृदय की मुक्तावस्था रसदशा कहलाती है।

5) काव्य में अर्थग्रहण मात्र से काम नहीं चलता; बिम्ब ग्रहण अपेक्षित होता है।

6) बंदर को शायद बंदरिया के मुँह में ही सौन्दर्य दिखाई देता होगा।

7) एक प्रकार के कविराज तो रईसों के मुँह में मकरध्वज रस झोंकते थे ×× ग्रीष्मोपचार

Scanned by CamScanner

आदि के नुस्खे भी कवि लोग तैयार करने लगे

8) कविता देवी के मन्दिर ऊँचे, खुले, विस्तृत और पुनीत हृदय हैं।

9) जो वस्तु हमसे अलग है, उसकी मूर्ति मन में लाकर सामीप्य का अनुभव करना धर्म के क्षेत्र में उपासना कहलाता है और साहित्य के क्षेत्र में कल्पना

10) कर्म प्रवृत्ति के लिए मन में कुछ वेग का आना आवश्यक है।

श्रद्धा - भक्ति

1) किसी मनुष्य में जनसाधारण से विशेष गुण या शक्ति का विकास देख उसके संबंध में जो एक स्थायी आनंद पद्धति हृदय में स्थापित हो जाती है उसे श्रद्धा कहते हैं।

2) ××× तो हम समाज के किसी काम के न ठहरे, समाज को हमसे कोई आशा नहीं, हम समाज में रहने योग्य नहीं।

3) श्रद्धा और प्रेम के योग का नाम भक्ति है।

4) बुद्धि से भक्ति करना ऐसा ही है जैसे नाक से खाना और कान से सूँघना

5) हमारी प्रसन्नता से उसे अपने सामर्थ्य का बोध हो जाता है और उसका उत्साह बढ़ता है।

6) इस व्यापार युग में ज्ञान बिकता है, न्याय बिकता है, धर्म बिकता है — तब श्रद्धा ऐसे भाव क्यों न बिके?

7) क्षात्र धर्म सम्पूर्ण जीवन की समष्टता है — शक्ति के साथ क्षमा, वैभव के साथ विनय, पराक्रम के साथ रूप-माधुर्य, सुखभोग के साथ परदुखकातरता।

8) प्रेम में घनत्व अधिक है, श्रद्धा में विस्तार।

9) यदि प्रेम स्वप्न है तो श्रद्धा जागरण।

10) संगीत के पेंच-पाँच देखकर भी हठयोग याद आता है जब कोई कलावंत ××× आठ अंगुल मुँह फैलाता है ×××

11) हितोपदेश के गदहे ने तो बाघ की खाल ओढ़ी थी, पर ये लोग बाघ की बोली बोल लेते हैं।

12) वे उसी प्रकार दुर्व्यसनी कहे जा सकते हैं, जिस प्रकार शराबी, गंजेडी या चंडूबाज।

13) कामियों, स्वार्थियों और खुशामदियों का ××× का अपवित्र हृदय कविता के निवास के योग्य नहीं।

14) उसे या तो काँटों पर या तो लाई कोस के दिन में चलना पड़ता है।

संसार सागर की तरंगों से ही कल्पना का विकास होता है और उसी से भावों और मनोविकारों का।

यदि राम हमारे काम के हैं तो रावण भी हमारे काम का है।

यात्रा के लिए निकलती रही है बुद्धि, पर हृदय को भी साथ लेकर

साहित्य जनसमूह के हृदय का विकास है

1) जो जाति जिस समय जिस भाव से परिपूर्ण या परिप्लुत रहती है, वे सब भाव उस समय के साहित्य की समालोचना से प्रगट हो जाते हैं।

2) जनसमूह के चित्त का चित्रपट

3) सूच्यग्रम् नैव दास्यामि विना युद्धेन केशव

4) अश्वत्थामा हत: नरो वा कुंजरो वा

5) एक नारी जब दो में फँसी, जैसे सत्तर वैसे अस्सी

भारतीय संस्कृति : गुलाब राय

1) संस्कृति शब्द का सम्बन्ध संस्कार से है, जिसका अर्थ है संशोधन करना, उत्तम बनाना, परिष्कार करना।

2) 'killing two birds with one stone' वहाँ ३ हिंसात्मक प्रवृत्ति का परिचायक है।

3) कोयल बेचन हरि मिलन, एक पंथ दो काज

4) भारत गरम देश है, यहाँ हृदय को शीतल करना मुहावरा है, किन्तु आंग्ल देश ठंडा है, वहाँ के अनुकूल warm reception और cold treatment आदि मुहावरे हैं।

5) समन्वय द्वारा ही संस्कृति क्रमशः उन्नति करती रही है।

6) हम कितना लें और कितना छोड़ें, यह हमारे सामने बड़ी समस्या है।

7) अश्वत्थ: सर्व वृक्षाणाम्

8) अतिथि देवो भव

साहित्य का उद्देश्य (प्रगतिशीलता)

1) साहित्यकार या कलाकार स्वभावत: प्रगतिशील होता है।

2) उसे अपने अन्दर भी एक कमी महसूस होती है और बाहर भी।

3) हमें उस कला की आवश्यकता है जिसमें कर्म का सन्देश हो।

Scanned by CamScanner

4) मैं कला को भी उपयोगिता की तुला पर तौलता हूँ।

5) साहित्यकार का लक्ष्य केवल महफिल सजाना और मनोरंजन का सामान जुटाना नहीं है।

6) वह देशभक्ति और राजनीति के पीछे चलने वाली भी नहीं है, बल्कि उनके आगे मशाल दिखाती हुई चलने वाली है।

7) इसमें शक नहीं की साहित्यकार पैदा होता है, बनाया नहीं जाता।

8) हमें अपनी रुचि व प्रकृति के अनुकूल विषय चुन लेने चाहिएँ और विषय पर पूर्ण अधिकार प्राप्त कर लेना चाहिए।

9) जिन्हें धन-वैभव प्यारा है, साहित्य मंदिर में उनके लिए स्थान नहीं।

10) जो जनसाधारण का है, वह जनसाधारण की भाषा में लिखता है।

11) हमारी कसौटी पर वही साहित्य खरा उतरेगा ××× जो हममें गति, संघर्ष और बेचैनी पैदा करे, सुलाए नहीं, क्योंकि अब और ज्यादा सोना मृत्यु का लक्षण है।

12) हमें सुन्दरता की कसौटी बदलनी होगी।

कुटज - आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

1) जीना चाहते हो? कठोर पाषाण को भेदकर, पाताल की छाती चीरकर - अपना भाग्य संग्रह करो।

2) जिजीविषा से भी प्रचण्ड कोई-न-कोई शक्ति अवश्य है।

3) कितना विशाल वह हृदय होगा जो सुख से, दुख से, प्रिय से, अप्रिय से विचलित न होता होगा।

4) दुःख और सुख तो मन के विकल्प हैं। सुखी वह है जिसका मन वश में है, दुःखी

वह है जिसका मन परवश है।

5) पहचानता हूँ उजाड़ के साथी, अच्छी तरह पहचानता हूँ! नाम भूल रहा हूँ।

6) रूप व्यक्ति सत्य है, नाम समाज सत्य)

7) मेरा मन नाम के लिए व्याकुल है, समाज द्वारा स्वीकृत, इतिहास द्वारा प्रमाणित

8) इस गिरिकूट बिहारी का नाम क्या है?

9) वेश्या है क्या? या मस्तमौला है?

10) रूप मुख्य है या नाम?
नाम बड़ा है या रूप?

11) व्हाट्स देअर न दि नेम?

उत्तराफाल्गुनी के आसपास (कुबेरनाथ राय)

1) जो हमारे हाथ में था, जिसे करने के लिए हम जन्मे थे, वह वस्तुतः घटित होता है पच्चीस और पैंतालिस के बीच में।

2) तीसोत्तर दशक जीवन का घनघोर कुरुक्षेत्र है।

3) प्राणशक्ति का अवरोहण

4) छिन्नमस्ता राजनीति के रंगकट

5) सर्वहारा संस्कृति अज्ञात शून्य से उपजने वाली चीज नहीं है।

6) ओहम् अमृतम् इच्छामि।

7) कहीं-न-कहीं मेरे अन्दर ही अमृत कला की गाँठ होगी, उसे ही मुझे आविष्कृत करना होगा।

संवत्सर (अज्ञेय)

1) झरना : झरता पत्ता
हरी डाल से
अटक गया

2) जो कुछ है सब मिटता जाएगा, लेकिन मिट जाने के लिए नहीं, इसलिए कि दूसरा कुछ बनता जाएगा।

3) संवत्सर ही एक यज्ञ था ××× और इस यज्ञ में जीव मात्र निरंतर योग दे रहा था।

4) सचमुच कुछ प्रश्नों की सफलता इसी बात में होती है कि हम उस प्रश्न तक पहुँच गए हैं।

5) मैं जंगलों में अधिक रहा हूँ, प्रकृति के निकट अधिक रहा हूँ।

तुलसी साहित्य के सामंत विरोधी मूल्य

1) भक्ति आन्दोलन इस जातीय आन्दोलन का सांस्कृतिक प्रतिबिंब था।

2) (पुरोहितों का चमत्कार)
यह काम उनके लिए नया भी न था, वे और ग्रंथों के साथ भी यह कर चुके थे।

3) तुलसी के राम न्याय-अन्याय के संघर्ष में तटस्थ नहीं रहते। वे न्याय का सक्रिय पक्ष लेते हैं।

4) सहनशील हैं, लेकिन एक सीमा तक

1) हे लेफ्टिनेंट भैया! राखी का दिन बीत गया। तुम्हें राखी बंधवाने की फुरसत न मिली।

2) वाह रे भाई दर्पण! मैं तो यही समझता था कि तुम लोगों से नजर लड़ाते हो।

3) चना अन्नों का शहंशाह है।

4) नारी रहस्य का सिन्धु है।

Scanned by CamScanner

भारत दुर्दशा

1) शैव शाक्त वैष्णव, अनेक मत प्रकटि चलाए
जाति अनेकन करि, नीच अरु ऊँच बनाए

2) कोउ नृप होउ हमे का हानि

3) अजगर करे न चाकरी, पंछी करे न काज

4) दुनिया मे हाथ पैर हिलाना नहीं अच्छा।
मर जाना पै उठके कहीं जाना नहीं अच्छा।

5) मदवा पीले पागल; जीवन बीत्यो जात

6) देखो विदया का सूर्य पश्चिम से उदय हुआ चला आता है। ××× अँग्रेज का राज्य पाकर भी न जगे तो कब जागोगे?

7) अँगरेज राज सुख साज सजे सब भारी।
पै धन विदेस चलि जात इहै अति ख्वारी।
× × ×
सबसे ऊपर टिक्कस की आफत आयी
हा! हा! भारत दुर्दशा न देखि जाई

8) सबके पहिले जेहि ईश्वर धन बल दीनो,
सबके पहिले जेहि सभ्य विधाता कीनो

9) यह कोई नहीं कहता, सब लोग एकचित्त हो, विद्या की उन्नति करो, कला सीखो जिससे वास्तविक कुछ उन्नति हो। क्रमशः सब कुछ हो जाएगा।

10) मोटा भाई बना-बनाकर मूँड लिया।

11) एक जिन्दगी हजार निआमत है।

12) संतोषं परमं सुखं

13) अजग हमारा सृष्टि संहार कारक भगवान तमोगुण से जन्म है।

14) जो पढ़तव्यं सो मरतव्यं, जो नहि पढ़तव्यं वह भी मरतव्यं, तब फिर दन्त कटाकट किम् कर्तव्यम्?

15) प्रश्न एह जे हम लोग उसका दमन करने को शाकता कि हमारे बाहुबल के बाहर का बात है।

16) रात भर कुत्ता मेरा मुँह चाटता रहा ×× पर इसने न हौंका

17) मोटा आदमी जम्हाई लेता हुआ धीरे धीरे आता है।

18) गाता हुआ स्खलित नृत्य करता है।

19) फटे कपड़े पहिने, सिर पर अर्द्ध-किरीट, हाथ में टेकने की छड़ी, शिथिल अंग।

20) क्रूर, आधा क्रिस्तानी, आधा मुसलमानी, हाथ में नंगी तलवार लिए।

21) आँधी आने के भाँति शब्द
नेपथ्य में वैतालिक गान
रंगशाला के कुछ दीपकों का बुझा देना

22) अखबारों के शस्त्र और स्पीचों के गोले।

23) पर उनको पढ़ने का और समझने का संस्कार अभी किसको है?

24) इंग्लिश पॉलिसी नामक ऐक्ट और हाकिमेच्छा नामक दफा से।

स्कन्दगुप्त

1) हृदय काँप उठता है, देशाभिमान गरजने लगता है। <u>मुझे अधिकार की आवश्यकता नहीं।</u>

2) देश की दुर्दशा निहारोगे   कौन है देश को
डूबते को कभी उबारोगे   पुकारोगे
कुछ करोगे कि बस सदा रोकर

3) किसी का हमने छीना नहीं
प्रकृति का रहा पालना यहीं।

4) आपको अकर्मण्य बनाने के लिए देवसेना जीवित न रहेगी

5) निछावर कर दे हम सर्वस्व
हमारा प्यारा भारतवर्ष

6) भारत समग्र विश्व का है ××× भारत किस मूर्ख को प्यारा नहीं।

7) मुझे तुझको पुत्र कहने में संकोच होता है।

8) खंडहरों से उधार ली हुई सभ्यता नाम की विलासिता के पीछे आर्य जाति उसी तरह पड़ी है जिस तरह कुलवधू को छोड़कर कोई नागरिक वेश्या के चरणों में

9) अन्न पर स्वत्व है भूखों का और धन पर स्वत्व है देशवासियों का

10) युद्ध क्या गान नहीं है?

11) आज आर्य जाति का प्रत्येक बच्चा सैनिक है

Scanned by CamScanner

12) ऐसा जीवन तो विडंबना है जिसके लिए दिन रात युद्ध करना पड़े।

13) सब क्षणिक सुखों का अन्त है

14) मेरे इस जीवन के देवता। और उस जीवन के प्राप्य।

15) बौद्धों का निर्वाण, योगियों की समाधि और पागलों सी सम्पूर्ण विस्मृति, मुझे एक साथ चाहिए।

16) विश्व के प्रत्येक कम्प में एक ताल है।

17) परिवर्तन ही सृष्टि है, जीवन है। स्थिर होना मृत्यु है।

18) समय पुरुष और स्त्री की गेन्द लेकर खेलता है। यह जड़ प्रकृति का चेतन रहस्य है।

19) अपने कर्म को ईश्वर का कर्म समझकर जो करता है, वही ईश्वर का अवतार है।

20) पात्रों की ऐतिहासिकता के विरुद्ध चरित्र की सृष्टि न होने दी है।

21) चल रे रक्त के प्यासे कुत्ते! चल अपना काम कर

22) पक्षियों को देखो, उनकी चहचह, कलकल, छलछल में, काकली में, रागिनी है।

23) अधिकार सुख कितना मादक व सारहीन है।

24) हृदय की कोमल कल्पना! सो जा।

25) हतभाग्य स्कन्दगुप्त! अकेला स्कन्दगुप्त

26) एकान्त में किसी कानन के कोने में तुम्हें देखता हुआ जीवन व्यतीत करूँगा।

27) कष्ट हृदय की कसौटी है, तपस्या अग्नि है।

28) बार बार क्यों कह रखा था, लूँगा मैं अवतार उमड़ रहा है, इस भूतल पर दुख का पारावार	भरा नैनों में मन में रूप किसी छलिया का अमल अनूप	आह वेदना मिली विदाई देश की दुर्दशा निहारोगे?

आषाढ़ का एक दिन

1) कमी इस वातावरण में नहीं, मुझमें है। [illegible] न तो मैं बदल सका, न सुखी हो सका।

2) एक दिन मैंने पाया कि मैं सर्वथा टूट गया हूँ।

3) अभावपूर्ण जीवन की प्रतिक्रिया

4) उन सबसे प्रतिशोध लेने की भावना भी थी जिन्होंने जब-तब मेरी भर्त्सना की थी, मेरा उपहास उड़ाया था।

5) क्या अधिकार है उन्हें कुछ भी कहने का? मल्लिका का जीवन उसकी अपनी सम्पत्ति है।

6) तुम रचना करते रहे और मैं समझती रही कि मैं सार्थक हूँ, मेरे जीवन की भी कुछ सार्थकता है।

7) [illegible]

8) [illegible]

9) हम जिएँगे हरिण शावक! जिएँगे न?

10) मैं अनुभव करता हूँ कि यह ग्राम प्रांतर मेरी वास्तविक भूमि है। ××× यहाँ से जाकर मैं अपनी भूमि से उखड़ जाऊँगा।

11) मेरी वह अवस्था बीत चुकी है, जब यथार्थ से आँखें मूँदकर जिया जाता है।

12) शास्त्रीय प्रमाण ऐसा है।

13) मैं वह व्यक्ति नहीं हूँ जिसे तुम पहचानती रही हो। दूसरा व्यक्ति हूँ ×× वह व्यक्ति हूँ जिसे मैं स्वयम् नहीं पहचानता।

14) मैंने अपना नाम खोकर, एक विशेषण उपार्जित किया है।

15) अधिकार मिला, सम्मान बहुत मिला, परन्तु मैं सुखी न हो सका।

16) मैं स्वयं ही परिस्थितियों के हाथों बनता और चालित होता रहा।

१७) मेघदूत के यक्ष की पीड़ा मेरी ही पीड़ा है।
और विरह विमर्दिता यक्षिणी तुम हो।

१८) जिसे तुम भावना कहती हो वह केवल
छलना और आत्मप्रवंचना है।

१९) राजनीति साहित्य नहीं ××× व्यक्ति को
बहुत जागरूक रहना पड़ता है।

२०) आषाढ़ का पहला दिन और ऐसी
वर्षा माँ! दूर दूर तक की उपत्यकाएँ
भीग गईं। ..... और मैं भी तो!

२१) इस तरह खड़ी रही तो जुड़ा
जाऊँगी।

२२) दूध औटा दिया है।

---

२३) ये पृष्ठ अब कोरे कहाँ हैं मल्लिका?
इन पर एक महाकाव्य की रचना हो चुकी
है .... अनंत सर्गों के एक महाकाव्य की।

---

२४) विलोम क्या है? एक असफल कालिदास!
और कालिदास? एक सफल विलोम

२५) वह काशी गया है तो भी मैं खुश,
नहीं गया तब भी मैं खुश।

२६) जितना संभव है कि ऐसा न हो,
उतना ही संभव है कि ऐसा हो। और यह
भी संभव है कि जो हो, वह न हो।

Scanned by CamScanner